नैतिक प्रत्यय : सत् और शुभ

मानव आचरण के नैतिक निर्णय में सत् और शुभ दोनों प्रत्ययों का व्यवहार होता है, इसलिए इन दोनों में परस्पर संबंध पाया जाता है। सत् या उचित कर्म उसे कहते हैं, जो नैतिक के अनुकूल रहे। असत् या अनुचित कर्म वह है, जो नैतिक नियमों से असंगत हो। दोनों से ही नैतिक नियमों का संकेत मिलता है।

नैतिक नियम स्वयं साध्य नहीं है। नैतिक नियमों का लक्ष्य रहता है सर्वोच्च शुभ की प्राप्ति। सत् या उचित कर्म नैतिक नियमों की सिद्धि में सहायक है और इन नैतिक नियमों द्वारा सर्वोच्च शुभ की प्राप्ति होती है। इस प्रकार सत् या उचित शुभ की प्राप्ति का एक साधन बन जाता है। अनुचित या असत् कर्म अशुभ को उत्पन्न करते हैं। हमारा लक्ष्य शुभ की प्राप्ति है और इस शुभ की प्राप्ति सत् या उचित द्वारा होती है। अतः शुभ साध्य है और सत् या उचित साधन।

सत् का प्रत्यय शुभ के प्रत्यय से गौण कोटि का है। साध्य हमेशा अपने साधन से बड़ा

माना जाता है। शुभ एक साध्य है और एक साधन। शुभ एक आदर्श है, जिसकी प्राप्ति के लिए व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार का प्रयास करना चाहिए। यह वह आदर्श है, जो उसके प्रज्ञामय स्वरूप की तृप्ति करता है। यह वह आदर्श है, जो उसकी संपूर्ण आत्मा को - इंद्रियमय और बुद्धिमय दोनों को - संतुष्ट करता है। सत् का प्रत्यय नैतिक नियम का कर्तव्य नियम के प्रत्यक्ष से निकला है। नैतिक नियम प्राकृतिक नियम नहीं है। इसे वास्तविकता का कथनमात्र नहीं माना जा सकता। "नैतिक नियम उसका नियम है जिसे होना चाहिए।" 'सत्' वैधानिक नीति-शास्त्र का मौलिक प्रत्यय है, किन्तु 'शुभ' प्रयोगवादी नीतिशास्त्र का मूलभूत प्रत्यय।